3 रसखान

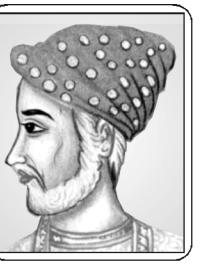

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**सन् 1533 ई0।
- **जन्म-स्थान–**दिल्ली।
- **अन्य जन्म-स्थान–**पिहानी, हरदोई (उ.प्र.)
- **गुरु–**गुसाईं विट्ठलनाथ।
- **रस–**भक्ति, शृंगार।
- **वास्तविक नाम-**सैयद इब्राहीम।
- **मृत्यु–**सन् 1618 ई0।
- **प्रमुख रचनाएँ-**'सुजान रसखान', 'प्रेमवाटिका', 'बाल लीला', 'अष्टयाम'।
- **भाषा-**ब्रज।
- **शैली-**मुक्तक, सरल एवं परिमार्जित।

रसखान सगुण काव्य-धारा की कृष्ण-भक्ति शाखा के कवि थे। इनका वास्तविक नाम सैयद इब्राहीम था। ये दिल्ली के पठान सरदार कहे जाते हैं। कुछ विद्वान् इन्हें पिहानी का निवासी मानते हैं। किन्तु इस विषय में कोई प्रबल प्रमाण उपलब्ध नहीं है। वैसे रसखान किसी बादशाह के वंशज थे, ऐसा 'प्रेमवाटिका' की अधोलिखित पंक्तियों से स्पष्ट है—

''देखि गदर हित साहिबी, दिल्ली नगर मसान।
छिनहिं बादसा-वंश की, ठसक छोरि रसखान॥''

इनके जन्म के सम्बन्ध में मतभेद है। कुछ विद्वान इनका जन्म 1533 ई0 मानते हैं। किन्तु मिश्रबन्धु ने 1548 ई0 माना है। इनका जन्म दिल्ली में हुआ था। ये गुसाईं विट्ठलनाथ के शिष्य हो गये थे। इनका उपनाम रसखान 'यथा नामः तथा गुणः' पर आधारित था, क्योंकि इनके एक-एक सवैये वास्तव में रस के खान हैं। सन् 1618 ई0 के लगभग इनकी मृत्यु हुई।

रसखान आरम्भ से ही बड़े प्रेमी व्यक्ति थे। इनका लौकिक प्रेम भगवान् कृष्ण के प्रति अलौकिक प्रेम-भाव में परिवर्तित हो गया था। ये जितना कृष्ण के रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध थे, उतना ही उनकी लीला-भूमि ब्रज के प्राकृतिक सौन्दर्य पर भी। कृष्ण के प्रति इनके प्रेम-भाव में बड़ी तीव्रता, गहनता और आवेशपूर्ण तन्मयता मिलती है। इसी कारण इनकी रचनाएँ हृदय पर मार्मिक प्रभाव डालती हैं। अपनी भाव-प्रबलता तथा सरलता के कारण इनकी रचनाएँ बड़ी लोकप्रिय हो गयी हैं।

रसखान की चार पुस्तकें प्रसिद्ध हैं, **'सुजान रसखान'**, **'प्रेमवाटिका'**, **'बाल लीला'**, **'अष्टयाम'**। 'सुजान रसखान' की रचना कवित्त और सवैया छन्दों में हुई है तथा 'प्रेमवाटिका' की दोहा छन्द में। 'सुजान रसखान' भक्ति और प्रेम-विषयक मुक्तक काव्य है तथा इसमें 139 भावपूर्ण छन्द हैं। 'प्रेमवाटिका' में 25 दोहों में प्रेम के स्वरूप का काव्यात्मक वर्णन है। अन्य कृष्ण भक्त कवियों की भाँति इन्होंने परम्परागत पद-शैली का अनुसरण नहीं किया। इनकी मुक्तक छन्द-शैली की परम्परा रीतिकाल तक चलती रही।

भाषा–रसखान ने ब्रज भाषा में काव्य-रचना की। इनकी भाषा मधुर एवं सरस है। उसका स्वाभाविक प्रवाह ही इनके काव्य को आकर्षक बना देता है। इन्होंने कहीं-कहीं पर यमक तथा अनुप्रास आदि अलङ्कारों का प्रयोग किया है जिससे भाषा-सौन्दर्य के साथ भाव-सौन्दर्य की भी वृद्धि हुई है। भाषा में प्रसाद गुण की अधिकता है और सर्वत्र ही सरल, सुमधुर, सरस, प्रवाहमय व भाव गांभीर्ययुक्त भाषा के दर्शन होते हैं।

शैली–इनकी शैली अत्यन्त सरल और प्रभावोत्पादक है। रसखान के समय में गीत पद्धति का प्रचलन था। गीत छन्दशास्त्र के बन्धनों से मुक्त होता है, इस कारण रसखान ने अपने भाव प्रकट करने के लिए कवित्त, सवैया और दोहा छन्दों का प्रयोग किया। रसखान ने मत्तगयन्द सवैये और मनहरण कवित्त लिखे हैं। उन्होंने कवित्त और सवैये शैली को पुनः जीवित किया।

सवैये

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर-धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन।।1।।

आजु गई हुती भोर ही हौं, रसखानि रई वहि नंद के भौनहिं।
वाको जियौ जुग लाख करोर, जसोमति को सुख जात कह्यो नहिं।।
तेल लगाइ लगाइ कै अँजन, भौंहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं।
डारि हमेलनि हार निहारत वारत ज्यौ चुचकारत छौनहिं।।2।।

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजति पीरी कछोटी।।
वा छबि कों रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निधि कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।।3।।

जा दिन तें वह नंद को छोहरा, या बन धेनु चराइ गयौ है।
मोहिनि तानि गोधन गावत, बेनु बजाइ रिझाइ गयौ है।।
वा दिन सो कछु टोना सो कै, रसखानि हियै मैं समाइ गयौ है।
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर, बिकाइ गयौ है।।4।।

कान्ह भए बस बाँसुरी के, अब कौन सखी, हमकों चहिहै।
निसद्यौस रहै सँग-साथ लगी, यह सौतिन तापन क्यौं सहिहै।
जिन मोहि लियौ मनमोहन कौं, रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आऔ सबै सखी, भागि चलैं अब तो ब्रज में बँसुरी रहिहै।।5।।

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी, बन गोधन ग्वारन संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो तेरे कहें सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।6।।

कवित्त

गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल
आगे गैयाँ पाछें ग्वाल गावै मृदु बानि री।
तैसी धुनि बाँसुरी की मधुर मधुर, जैसी
बंक चितवनि मंद-मंद मुसकानि री।
कदम बिटप के निकट तटिनी के तट
अटा चढ़ि चाहि पीत पट फहरानि री।
रस बरसावै तन-तपनि बुझावै नैन
प्राननि रिझावै वह आवै रसखानि री।।7।।

('रसखानि-ग्रन्थावली' से)

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) मानुष हौं ·····की डारन।
   (ख) धूरि भरे ·····माखन-रोटी। **(2020MD)**
   (ग) जा दिन तें ·····बिकाइ गयौ है।
   (घ) कान्ह भए ·····बँसुरी रहिहै।
   (ङ) मोर-पखा ····· न धरौंगी। **(2020MA, MA)**
   (च) गोरज बिराजै·····मुसकानि री।
2. रसखान का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2017AB,AC,AE 19AD)**
3. रसखान की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. रसखान की प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।
5. रसखान की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं और शैली पर प्रकाश डालिए।
6. रसखान का जीवन-परिचय लिखिए तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
7. रसखान ऐसी कामना क्यों करते हैं कि यदि भगवान् उनको पक्षी बनाये तो ऐसा पक्षी बनाये जो यमुना के किनारे कदम्ब की डाल पर बसेरा करता हो?
8. कृष्ण के हाथ से रोटी छीन कर उड़ जानेवाला कौआ कवि को भाग्यशाली क्यों लगा?
9. जब से श्रीकृष्ण वन में गाय चराने गये, तब से वहाँ के लोगों की क्या दशा हो गयी?
10. गोपियाँ कृष्ण की मुरली को अपनी सौत क्यों समझती हैं?
11. गोपियाँ ब्रज से क्यों भाग जाना चाहती हैं?
12. गोपी अपनी सखी के कहने पर कौन-कौन से स्वाँग करने को तैयार है? वह कौन-सा कार्य करने को मना करती है?
13. 'जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन' में प्रयुक्त अलंकार का नाम परिभाषा सहित बताइए।
14. 'सवैया' छन्द की सोदाहरण परिभाषा लिखिए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

रसखान के 'सवैये' एवं 'कवित्त' पढ़ने के बाद आप पर क्या प्रभाव हुआ, स्पष्ट कीजिए।

टिप्पणी

1. **मानुष** = मनुष्य। **हौं** = होऊँ। **धेनु** = गाय। **मँझारन** = बीच में। **पाहन** = पत्थर। **डारन** = डाल। **खग** = पक्षी। **जो धर्‌यौ कर छत्र पुरन्दर धारन** = इन्द्र की मूसलधार वृष्टि से ब्रज को बचाने के लिए श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत छत्र की भाँति हाथ पर उठा लिया था। **कालिन्दी कूल** = यमुना तट (पर)।

2. **रई** = प्रेम में डूब गयी। **वाको** = उसका (पुत्र) यशोदा का पुत्र, श्रीकृष्ण। **हमेलनि हार** = गले में पहनने का भूषण। **जियौ** = जिय, प्राण। **डिठौनहिं** = नजर लगने के भय से शिशु के मस्तक पर लगाया गया काजल का टीका। **छौनहिं** = पुत्र को। **गई हुती** = गई थी। **भोर** = प्रातःकाल।

3. **कोटी** = कोटि, करोड़। **कछोटी** = कच्छा, काछनी। **अँगना** = आँगन। **पैजनी** = पायल। **छबि** = सौन्दर्य। **बिलोकत** = देखते हैं।

4. **गोधन** = ब्रज में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। **बीर** = हे मित्र, सखा। **धेनु** = गाय। **बेनु** = बंशी। **हियै** = हृदय।

5. **दहिहै** = जलायेगी। **निसद्यौस** = रात-दिन। **तापन** = सन्तापों को।

6. **भावतो वोहि मेरो रसखानि** = मेरे कृष्ण को जो प्रिय है, जो कुछ भी उन्हें रुचिकर है। **स्वाँग करौंगी** = रूप धारण करूँगी, अभिनय करूँगी। **अधरान धरी-अधरा न धरौंगी** = (i) अधरों पर रखी हुई मुरली को मैं अपने अधरों पर नहीं रखूँगी। (ii) (तेरे कहने से) मैं कृष्ण के होंठों पर रखी हुई मुरली को अपने होंठों पर रख लूँगी। **मोर–पखा** = मोर पंख। **पितंबर** = पीला वस्त्र। **भावतो** = अच्छा लगता है।

7. **गोरज** = गायों के पैरों से उड़ी हुई धूल। **बानि** = वाणी। **बंक** = टेढ़ी। **तटिनी** = नदी, यमुना। **लहलही** = शोभायमान हो रही है। **चितवन** = दृष्टि। **विटप** = वृक्ष। **पीतपट** = पीला वस्त्र।